

DPN 5656

Title : पिण्ड शये विधि PINDA THAYE VIDHI

Run. No. 6347

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Obituary note*
पिण्ड शये विधि

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

नेपाल भाषा निदेशक
Newa direction

Size in cms. 14 x 7.5

Folios 11

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu / *nila patra*

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

centimeter 5

10

15

10

७१



centimeter 5

10

15

5

यिं चो विपत्तिना दवताया मन्त्रा वला क
 नकारय्य सुखी मन्त्रा न्य पस्य बुद्धिं सु
 कर्हिं ह सुगुण देव उ मन्त्रा ना मिद मा सु
 न मा लिता न तिलं न इर्गति मूर्कं मधु ना
 नाहि का मूर्कं दधि ना आश मूर्कं कुल
 न र नों ग मूर्कं जीन सु मि वि उ अ च्च रि न

0

ज

षांग विपु मि ला ह मनी न्यत्रेः ॥ विपु दान
 म हं कति व्यक्षायक ॥ ॥ कै प ला क न न ॥
 च न रू ल जी का न अ म ला हा व मा ना डी का
 यक ॥ ॥ च न रू ल न हा ग थ य ॥ ॥ उ ध न
 क्षा तु वा ला न्य न विपु हा गं ला हा ॥ नि उ
 ह ना द या न ॥ ॥ प्र वि ता म ह विपु हा गं

0

centimeter 5

10

15

20

स्वधाम ॥ तर्थाञ्जना ॥ ॥ विनामहवि
 लुगं स्वधाम ॥ अञ्जना ॥ ॥ विनामहि
 लुगं स्वधाम ॥ अञ्जना ॥ ॥ दिक्कतपि
 लुगं स्वधाम ॥ शिकक्यात ॥ ॥ काका
 काकपि लुगं नाल्लुगं तपि लुगं विक्र
 पि लुगं स्वधाम ॥ यिकलुग्यात ॥ ॥ त्रय्य

दक्षिणाक्षरमाधुर्यं तं गमक ॥ अ प त व कः
क्षरमाधुर्यं च धय द ॥ ॥ धनये च क
य ॥ अ क त धा र्हा स्तं ग ह त य ॥ ॥ वि उ स
जि ज ना म्हा क ज अ क त ग म्हा त य ॥ ॥ धन
ला हा न सि के ॥ ॥ धे उ या न ल म्हा म्हा स्या त
कै म त या न क ल म्हा त य ॥ ॥ क ल क
म ल म्हा म्हा क त वि उ म ल

म. १० मा. मा. क. १० ३० ४०

centimeter 5

10

15

20

5

किं हा इह मौल्यं नृणां कृतं कृतं ॥
 वाक्यं याच ॥ ४ ॥ तस्मिन् नृणां सर्वेषां दि
 वगता नां इति विमोचनं नृणां तिष्ठति
 यद्येव गता मातृवे च वल कृष्णसुतं क।
 त्रिष्य ॥ यथा तत्तथा गताया पूर्वमेव
 ह्यः सुपतिमानि तादृकिना हि मुखे वि

0

5

पुमि त्वा विपत्तिना देवताया सिद्धि
 ना विन्यत व ह्यथा । कुरु कुरु प्रसन्न
 या देवताया महा वला । कनकाख्यं
 दत्तं नृणां मतं काल्यपस्यत्वा । पुत्रिणा
 कसिंहं स्वर्गं कदापि दत्तं नृणां ॥
 तद्वत् पुम्वानां कनकासुतं मालि

0

centimeter 5

10

15

20

5

तां धर्मां च उवाच न कृष्ण सुत प्रपति
 सुतान् नमो नाता कृष्ण सुत प्रपति कृ
 तां चित्रेण वन कृष्ण सुत प्रपति कृ तां
 ॥ अतिकृष्ण सुत ॥ ख्यालपततय ॥
 कुं व सुभ्रियं स्या हा ॥ ॥ सुं य न हा
 य ॥ ॥ अतिमिंयां स्या हा ॥ ॥ जाकि

0

5

सुततय ॥ सुपुष्पं स्या हा ॥ ना सुत न र
 जा हा वया य ॥ ॥ अभापतुको पातु स्यः
 सुभ ॥ ॥ अनेवेश काया अर्य अ पात्रा
 हाती सुत यथा ॥ सु ॥ पंचा न न हा न
 या क ॥ ॥ अं न भा हा ग वत वेता व न ७
 रुके रुमा जायत अगता या हित संप्यः

0

centimeter 5

10

15

20

15

10

5

0

centimeter 5

10

15

20

पाशादिपुष्पन्यासः ॥ ॥ पंचवक्त्रः ॥
 मातृवैश्वानरहृतात्रकस्यः पाशात्रमंत्रं
 मः ॥ प्राकृष्टं नमः ॥ ॥ धनत्रैतुः
 यातस्वानवाय ॥ ॥ तं आर्चयेत्
 ननायनमः स्वाहा ॥ ॥ तं अर्चयेत्
 यनमः स्वाहा ॥ नलेसुमृदायनमः

15

0

10

0

centimeter 5

10

15

20

मर्ववित्तुनीपायमहावजाह्वकनरप्रदीपप्र
 लोपात्रमितापूजापद्यसुडसुसुनरमयसुभा
 ॥ ताम् ॥ ॥ मर्ववित्तुनीपायमहावजाह्व
 माजाकनकाकितामितापूजापद्यसुड
 सुलनसुनयसुभा ॥ ॥ क्रात ॥ ॥ मूर्तनम
 हा मूर्त सर्वदूर्जतिपनिनेधनराजायन

धामतामाहंनसुंमसंबुजायनमथातुं
 मर्वविलोममर्वलोमधिविलोमधिवर्तकमार्त
 ननविलोमधयसुभाहं ॥ ॥ वितावितामह्वेव
 तथेवप्रवितामहाहकिंप्रजाकुमिपुनाम
 मादहनहन ॥ ॥ मूर्तममा ॥ ॥ मातामाता
 महीनवतथेवप्रमातामहीहकिंप्रमाकु
 मादहनममादहनहन ॥ ॥ कृमाह्व

51

अतुमंभ्रव्याधूपयोनं विद्यादिकं यत्कुरुते
 तदप्यत्रिपूर्वपत्रिपूर्वमस्तु ॥ मन्त्रहीनं किञ्चि
 हीनं ह्यहीनं तत्त्रिवर्गं तदस्तु सर्वसंपूर्णं न
 मस्तु पितृदेवताः ॥ ॥ अतर्विकल्पात्तद्वत्तः
 सनयाय ॥ ॥ अथादियथा तत्तथा गताया
 र्वगमप्रत्ययः सूपत्रिपात्रितादक्रियते हि
 त्यपि तु यि स्वाविपत्तिना देवतायाः

0

७

विना विहृतं तथैव ॥ प्रकृष्टं न्यप्रसूत्रस्य
 देवताया मन्त्रवत्ता ॥ कतकाद्योऽस्य देवता
 प्रीमत्तकाभ्यपस्यव ॥ प्रसूत्रसाक्षिभिः
 सबद्धं तु हि दलसूत्रः ॥ तद्वत्तु प्रसूत्रा
 नापि दमासनमाश्रिताः ॥ काकादिका
 कपि तु स्वाभादिस्तानपि तु विकल्पादि

0

centimeter 5

10

15

20

5

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

ॐ कृष्ण एतन्मन्त्रं त्रिंशत् ॥ ॥ खलु
 लपतंतय ॥ ॥ ॐ वेदं धर्मं च सुखं ॥
 ॥ ॥ लंखनहाय ॥ ॥ ॐ ॥ अवातं सुखं ॥ ॥
 जाकि स्नानतय ॥ ॥ सुखा कृतं सुखं ॥ ॥ न
 सतनतलाहावयाय ॥ ॥ अधिपतु पातु सः
 सुखं ॥ ॥ धनं विक्रयकृतं तय ॥ ॥ अथादि

वाक्याय ॥ ॥ तस्मिन्मूर्तं सर्वं वादि वगता
 नां सर्वदृग्निमिदं सुगतिप्राप्तयं विक्रयवि
 उदानमहंकप्रियं अस्मयं न स्पृशथा ॥ ॥
 तुता मधेयस्य सर्वं वादि ॥ ॥ नां सर्वदृग्निमि
 मूर्य सुगतिप्राप्तयं विक्रयं ॥ ॥ उदानमहंकः
 त्रिंशत् पितृवंशं मतायं नाहर्वं लत्रयः
 मृता ॥ ॥ सुसुतं नयं नां यं नां यं नां यं नां यं

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

नरुल्लु कपिल्लु अरु दाना विवर्जिता क्रिया
 नाप नारायण आचमन वन आ विनू पा आ नः
 गली व हता हता हल्ल मना तस्या दकं मया वि
 नुं विकलुना म सुदिवकं। पूर्वन्ना सु हताय
 यथा व वायन न्नादि हिः अरु अ क्रिया यवः
 स्व दाना धर्म वर्जिता। आमगर्हा म तय व न
 मुक्ता न म त यय। सुं ह्ना त न हि तय य त्री न वा

दिष्टा मि नः मा कं ग क नु वि लु न मया द ह
 न हता त्र॥ पा का दि का क पि लु ह्ना ना दि ह्ना
 न पि लु ठि क न पि लु सु प्र ति ह्ना हा॥ ॥ धन
 ति ह्ना द क वि य॥ ॥ सुं ठि क न पि लु ति ह्ना द क
 कं न मः सुं प्र २ म हा प्र २ म न मि त प्र २ म
 न सुं २ म न मि त क न सुं सुं ह्ना त य नि उ क ध म
 ग न म सुं ह्ना व दि उ क न हा न य य नि व त्र सु
 मा इ दि य॥ ॥ सुं ठि क न पि लु की तार्थ सु धा॥ सुं क

॥

